

पद ३२५

(राग: काफी – ताल: दीपचंदी)

सब दुनिया मोह पसारा है । एक राम निराकार है । अंदर बाहर
सबहि भरा है ॥ध्रु॥ व्याप रहा जग सारा । झाडपाड जल पूर भरा
है । फिर दुनिया से न्यारा है ॥१॥ झूठी काया झूठी माया । झूठा
जगत बसाया है । मानिक कहे सब साधु कह गये । क्या मै जानूँ
गँवारा रे ॥२॥